हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G; II Sem

विषय - प्रगतिशील आन्दोलन और हिन्दी साहित्य :-

आधुनिक हिन्दी-काव्य में जब समाज के प्रति उत्तरदायी भावना-तत्व का उदय हुआ तथा भौतिकवाद को आधार मानकर साहित्य लिखा जाने लगा, तभी से प्रगतिशील आन्दोलन का जन्म समझा जाना चाहिए। प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के उपरान्त इस प्रकार की विचारधारा को नवीन बल तथा प्रेरणा प्राप्त हुई। यूरोप के दो महान विचारक — फ्रायड तथा मार्क्स की विचारधारा का प्रभाव भी विश्व के सभी देशों के साहित्य में परिलक्षित हुआ। उस प्रभाव से हिन्दी-साहित्य भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

दैनिक जीवन के विषमताप्रधान यथार्थ स्वरूपों ने जब साहित्यिक रूप ग्रहण किया, तब आलोचकों द्वारा उसे 'प्रगतिवाद' की संज्ञा दी गई। अतः

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद का जन्म 1936-37 ई० से माना गया।

प्रगतिवाद के जन्मकाल का आरम्भ देश-प्रेम, राष्ट्रीयता की भावना और उद्बोधन आदि की कविताओं से हुआ। भारतीय आत्मा ने 'पुष्प की अभिलाषा' व्यक्त की, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'झाँसी की रानी' कविता लिखी। दिनकर ने हिमालय को संबोधित करते हुए कहा — 'नवयुग - शंखध्वनि जगा रही
तू जाग - जाग, मेरे विशाल।'

कुछ आलोचकों के अनुसार राजनीति का समाजवाद साहित्य-क्षेत्र में प्रगतिवाद के रूप में उपस्थित हुआ। छायावादी कल्पना, भावुकता और आदर्श की प्रतिक्रिया में वर्गवैषम्यपूर्ण जनवादी दृष्टिकोण तथा सर्वहारा वर्ग के सहानुभूति के भाव काव्य की पृष्ठभूमि में चित्रित किए गये। प्रगतिवादी साहित्य ने इन्द्रधनुष के उड़नखटोले से उतरकर ठोस धरती पर पैदल चलने की अभिलाषा लेकर प्रकट हुआ। कवियों ने जीवन की वास्तविकताओं का दर्शन कराए।

'दिनकर' ने कहा है :—

"श्वानों को मिलता दूध वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते
माँ की हड्डी से चिपक, ठिठुर जाड़ों की रात बिताते

महाकवि पंत ने 'ग्राम्या' में वास्तविक मानवलोक पर दृष्टि डाली ___

"यह तो मानव लोक नहीं रे, यह है नरक अपरिचित।
यहाँ अकेला मानव ही रे विवश जीवन्मृत।।"

प्रगतिशील काव्य में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं: ___

(1) जीवन तथा जगत की समस्याओं का चित्रण करने वाले प्रगतिशील जीवन-दर्शन की प्रधानता।

(2) साहित्य को सामाजिक चेतनाप्रधान बनाया गया और व्यक्ति की चेतना को कम महत्व दिया गया।

(3) जन-कल्याण को साहित्य की भावभूमि में स्थान दिया गया।

(4) समाजवादी समाज-व्यवस्था का पक्ष लिया गया।

(5) साम्यवादी एवं पूँजीवाद विचारधारा का विरोध।

(6) सर्वहारा वर्ग की समस्या को उभारकर श्रमिक चेतना को प्रबुद्ध करना।

(7) कला को कला के लिए न मानकर जीवन के लिए स्वीकार करना।

(8) प्रगतिशील, वैज्ञानिक और मार्क्सवाद विचारधाराओं से प्रेरणा ग्रहण करना।

JULY 06
DAY 188/178
WEEK 28 | WEDNESDAY

(9) प्रगतिवादी कल्पित विचारों से असामाजिकता से जनता को परिचित कराना।
(10) जनवादी शक्तियों के संगठन की प्रेरणा देना।
(11) जनसाधारण की विचारधारा को उन्हीं की भाषा में प्रकट करना।
(12) साहित्य को प्रतिक्रियावादी तत्वों के विनाश का साधन बनाना।
(13) अंधविश्वासों और रूढ़ियों का खण्डन।
(14) धर्म - ईश्वर आदि का विरोध।
(15) धरती से जुड़ाव।
(16) नारी का यथार्थ चित्रण।
(17) आडम्बरहीन कला विधान।